



प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर ने ओडिशा के इतिहास, विरासत और भाषा को श्रद्धांजलि देते हुए उत्कल दिवस मनाया

भुवनेश्वर, 2 अप्रैल 2026: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने उत्कल दिवस को भव्य तरीके से मनाया। ओडिशा के पूर्व मुख्य सचिव और प्रख्यात ओडिया लेखक श्री तरुण कांति मिश्रा, आईएएस (सेवानिवृत्त), मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रो. श्रीपाद कर्मलकर और संस्थान के रजिस्ट्रार श्री बामदेव आचार्य भी उपस्थित थे।

प्रोफेसर करमलकर ने अपने भाषण का एक हिस्सा ओडिया में दिया, हालांकि उनकी मातृभाषा ओडिया नहीं है। उन्होंने ओडिशा में अपने तीन साल से अधिक के प्रवास के दौरान के अपने अनुभव का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि यह दिन "न केवल एक राज्य के गठन का प्रतीक है, बल्कि ओडिशा के लोगों की सांस्कृतिक पहचान, भाषाई एकता और सामूहिक आकांक्षाओं को भी दर्शाता है।" उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संस्थान सांस्कृतिक पहलों, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों पर शोध और स्थानीय कला और उद्यमिता को समर्थन देकर राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन में सक्रिय रूप से लगा हुआ है। अपने दृष्टिकोण को दोहराते हुए, उन्होंने कहा कि आईआईटी भुवनेश्वर का लक्ष्य अनुसंधान और नवाचार को क्षेत्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप ढालना और ओडिशा और राष्ट्र के लिए "परिवर्तनकारी प्रभाव का प्रतीक" बनना है।

सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री तरुण कांति मिश्रा ने एक समुदाय और राष्ट्र के अस्तित्व के लिए भाषा के महत्व और भाषाई विविधता के संरक्षण पर प्रकाश डाला। उन्होंने विश्व भर से कई उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे विभिन्न भाषाएँ विकसित हुई हैं और उन्होंने मानव जाति के विकास में योगदान दिया है। उन्होंने संस्कृति, पहचान और विचारों के वाहक के रूप में भाषाओं के संरक्षण के महत्व पर बल दिया। विश्व भर में लुप्तप्राय भाषाओं के उदाहरण देते हुए उन्होंने भाषाई विरासत के धीरे-धीरे लुप्त होने के प्रति आगाह किया और इस बात पर बल दिया कि "प्रत्येक भाषा का एक कर्तव्य है—यह हमारे विचारों को संप्रेषित करती है और उनकी रक्षा भी करती है।" उन्होंने युवा पीढ़ी से अपनी जड़ों पर गर्व करने का आग्रह किया और कहा कि "वैश्विक भाषाओं को सीखने और अपनी मातृभाषा से प्रेम करने में कोई विरोधाभास नहीं है।" छात्रों को अपनी भाषाई विरासत का महत्व समझने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने अपील की, "अपनी मातृभाषा से प्रेम करो, अपनी भाषा से प्रेम करो," इस बात पर जोर देते हुए कि यह पहचान और निरंतरता का केंद्र बनी हुई है।

प्रारंभ में, रजिस्ट्रार श्री बामदेव आचार्य ने स्वागत भाषण दिया और ओडिशा की समृद्ध विरासत और धरोहर का सम्मान किया। प्राचीन साहित्य और ओडिशा के महान साहित्यकारों की रचनाओं के उदाहरण देते हुए, उन्होंने ओडिया भाषा की समृद्धि पर प्रकाश डाला। उन्होंने सभी से अपनी मातृभाषा का सम्मान करने और मातृभूमि के उज्ज्वल भविष्य में योगदान देने का आग्रह किया।

संस्थान के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम ने इस अवसर की भावना को प्रदर्शित किया और दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।